Indian Streams Research Journal
Vol.2,Issue.IV/May; 12pp.1-4
पण्डया विजय कुमार प्रकाशचन्द्र
ISSN:-2230-7850

Research Papers

केन उपनिषद में उमा–हेमवती की कथा

पण्डया विजय कुमार प्रकाशचन्द्र
मुलाकाती अध्यापक (संस्कृत विभाग)
आदिवासी कला एवं वाणिज्य कॉलेज भिलोडा,
भिलोडा

Abstract

उपनिषद शब्द उप+नि+सद् धातु इसलिये ''पास बैठना'' का बना हुआ है। प्राचीनकाल में आश्रम व्यवस्था थी, इसलिये कि क्षत्रिय और ब्राम्हण ऐसे अध्यापकों के पास अध्ययन करने जाते थे, वहां अध्यापक की सेवा करते, गृहकार्य करते और अध्यापक उनको विद्या अभ्यास कराते (ब्रम्हान्वेषमाणाः समित्पाणयः)। ये शिष्य अध्यापक के पास रहकर ज्ञान प्राप्त करते, ऐसे में शिष्य और अध्यापक में तात्विक गुण बन जाता। एक रूप जेसे बन जाते, ये अध्यापक और शिष्य में जो तात्विक आचार–विचार करते वो 'उपनिषद्' तरिके से जाननें में आया।इस उप+नि+सद् शब्द में सद् धातु तीन अर्थो में प्रख्यात हैः नाश, प्राप्ति और शिथिलता।
उपनिषद के अभ्यास से अज्ञान का नाश होता है, परब्रम्ह की प्राप्ति होती है और जन्म–मृत्यु के दुःख में शिथिलता आती है।
शंकराचार्य ने अनुसार– य इमां ब्रम्ह विद्यामुपयान्त्यात्मभवेन श्रद्धामक्तिपुरःसराः, तेषां गर्भजप्मरारोगायवर्गं विनाशयति परं वा ब्रम्हा गमयति अविद्यासंस्कारकारणं चात्यन्तमवसादयति विनाशयति, इतयुपनिषद् उपनिपूर्वस्व सदेरेवमर्थ संस्मरणात्।
अर्थात जो व्यक्ति श्रद्धा भक्ति से आत्म तत्व को जानने के लिए ब्रम्हविद्या प्राप्त करता है, वो इस विद्या के गर्भ में रहकर, जन्म से वृद्धावस्था, रोग आदि दुःख दूर कर परम ब्रम्ह को प्राप्त करता है। उपनिषद का ज्ञान अविद्या संस्कार उत्पन्न कारणों को शिथिल कर दता है और कारणों का नाश कर ता है। ये उपनिषद है।

उपनिषद ज्ञान का अधिकारी मुमुक्षु तथा नम्र है, विषय परब्रम्ह है, संसार की निवृति और ब्रम्ह प्राप्ति हो इसका प्रयोजन है। प्रयोजन को सिद्ध करने का ग्रंथ है।

उपनिषद संख्या

भारतीय संस्कृति में प्राणसमा वैदिक साहित्य अटे आये हुए उपनिषद नाम चतुर्थ विभाग में उपनिषदों की संख्या कितनी है, इसमें मतभेद मिला है। एक मत प्रमाण के रूप में 220 जितने है, मुक्तिकोपनिषद में उपनिषदों की संख्या 108 जितनी मानने में आया है। उसमें से तेरह उपनिषद अधिक मुख्य है जो गिननें मे आये है, जो निम्न प्रकार हैः–

1. ऐतरेय उपनिषद, 2. कोषीतकी, 3. बृम्हदायरक, 4. ईशावस्य, 5. तैत्तिरय, 6. मैत्रायणी, 7. कंठ, 8. श्वेतावतर, 9. छांदोग्य, 10. केन, 11. प्रश्न, 12. मुण्डक, 13. मांडुकय

इन उपनिषदों के अलग–अलग वेद है, जैसे

उेतरेय और कोषीतकी उपनिषद ऋग्वेद है, जिसमें ऐतरेय उपनिषण ऋग्वेद ब्रम्हाण आरण्य आता है, और कोषीतकी उपनिषद में ब्राम्हण आरण्य आता है।

ईशावास्य और बृम्हदारयक उपनिषद शुकल यर्जूवेद के है। शुकल अर्जूवेद संहित 40वा अध्याय ही इशावास्य उपनिषद है। जब बृम्हदारयक उपनिषद शतपथ ब्राम्हण है।

तेत्किरीय उपनिषद कृष्णयर्जूवेद की शाखा का है। इस शाखा के दूसरे दो उपनिषद हैः श्वेताम्वतर और महानारायण। कृष्णयर्जूवेद काठक शब्द कठोपनिषद है, और मेत्राणी उपनिषद भी कृष्णयर्जूवेद मेत्राणी शाखा का है।

छांदोग्य, जैमिनीय और केनापनिषद सामवेद के है। जिसमें छांदोग्य उपनिषद सामवेद के आठ पाठो का है, जेमिनीय तथा केनोपनिषद सामवेदा तलवकार और जेमीनय ब्राम्हणों आरयक आता है।

अर्थवेद का कोई भी उपनिषद नहीं है। परन्तु जानने में ब्राम्हण के रूप में प्रश्नोपषिद, मुएडकोपनिषद, मांडूकयोपनिषद जेसे मिलते है।

अब कितने विद्ववानों ने शंकरायचार्य के उपनिषद के भागों में से दस उपनिषदों को अधिक महत्व के गीने है, जिसके अंग का श्लोक निचे प्रमाण के रूप में हैः

ईशकेनकठप्रश्नमुण्डूक्यतित्तिरियः।
ऐतरेयं च छान्दोग्यं बृहदाण्यकं तया।।

इसके अलावा शंकराचार्य के खुदके ब्रम्हासूत्र उपर के भाग में कोषीतकी, जाबल और महानारायण जेसे उपनिषदों का उल्लेख किया है। मेत्री अथवा मेत्रायणीय एक प्रचीन उपनिषद है।

उपनिषदनों का समय

संस्कृत साहित्य में किसी कृति तथा कृत्य का समय को तय करना बहुत ही कठिन है उसी तरीके से उपनिषदों का समय को तय करना भी बहुत कठीन है, उपनिषदों को लिखने में बहुत समय लगा होगा। जो कोई एक उपनिषद लिखना किसी एक के बस की बात नहीं। उपनिषद की रचनाकाल को समय में बांधना मुश्किल था

Please cite this Article as : *पण्डया विजय कुमार प्रकाशचन्द* **,** *केन उपनिषद में उमा–हेमवती की कथा* **: Indian Streams Research Journal (MAY ; 2012)**

इसलिए अलग–अलग विद्ववानों ने उपनिषद के समय अंगों को अलग–अलग मत प्रस्थापित किया है।

अत्यन्त प्राचीन जैसे ये उपनिषद वैदिक साहित्य के भाग है। जिससे उसका समय बुद्ध पहेलानों इसलिये ई.स. पूर्वे 600 पहेल का गिनने में आता है।

डॉ. राधाकृष्णन के मत के अनुसार ई.स. पूर्वे 800 से 300 वर्षो के बीच मे रचे होगें।

डॉ. कीथ के मतानुसार प्रचीन उपनिषद ई.स.पू. 500 से पहले रचित हुए थे, वोल्टर रूबन उपनिषद ई.स.पूर्व 70 से 550 के बीच में रचित हुए होगें। श्री रानडे बघा के उपनिषद ई.सं. पूर्व 1200 थी 600 के बीच रचित हुये होगें।

उपनिषदों के ये रचनाकाल उपनिषदों तत्व रचित अमुख पीढीयों तक गीने थी, पीढ़ी के अमुख वर्षों के प्रमाण बुद्धनी पहले के 150 वर्ष के बीच करने में आये होगें, ऐसा मानने में आता है।

उमा–हेमवती कथा अथवा किमिदम् यक्ष की कथा

उन उपनिषदा के तीसरे और चौथे खण्ड में उमा–हेमवती की कथा आयी है, एकबार विजय मिलने से देवों में अभीतान आया। वेसे तो ये विजय ब्राम्हणों की थी, परन्तु देवों ने इसे स्वयं का मान लिया। देवों का अभीमान जानकर ब्रम्हा उसके पास प्रकट हुये परन्तु देवों ने उन्हे नहीं पहचाना। उन्होनें कहां 'किमिदम् यक्षम्?ये यक्ष कोन है?'

देवों ने अग्नि देव को यक्ष की जानकारी लेने भेजा। अग्नि देव यक्ष के पास गया और अपनी पहचान बताई कि मैं अग्नि देव 'हूँ', जातवेद हूँ इसलिये संसार में जो कोई भी जन्म लेता है मैं उसको जानता हूँ। यक्ष ने उसका सामर्थ की विशेषता को देख पूछा 'इद्रं सर्वे दहेयं यदि पृथिव्याम्'–'इस पृथ्वी पर जो कोई भी है मैं उसे जला सकता हूँ' और पूछा यक्ष ने उक तणबुल देके उसे जलाने को कहा। अग्नि देव ने अपनी पूरी शक्ति काम मे ली परन्तु वो निष्फल रही। जो तणबुल को जला नहीं सके। अग्नि देव देवताओं के पास गये और कहा कि वे निष्फल हो गये है।

फीर देवताओं ने वायुदेव को यक्ष के पहचाने का काम दिया। वायु देव यक्ष के पास गये। यक्ष के पुछने पर वायुदेव ने अपना परिचय दिया कि 'मैं' इस पृथ्वी पर किसी को भी उडा सकता हूँ। यक्ष ने उसे तणबुल उडाने के लिये दिया परन्तु उसके कई प्रत्यनों के बाद भी सहज हिला नहीं सकें।

अब इन्द्र देव की बारी आयी। वो जैसे ही यक्ष के पास गये यक्ष अदृश्य हो गये और उनके स्थान पर अत्यन्त सून्दर 'उमा–हेमवती' दिखाई दी। उमा ने पहले यक्ष का परिचय दिया कि वे ब्रम्ह देव थे। उसके बाद इन्द्र, अग्नि और वायु देव ने ब्रम्हा का उपदेश दिया कि ये जो विजय थी वो ब्रम्हा की थी, तुम्हारी नहीं।

इस कथा में स्पष्ट होता है कि पृथ्वी पर जो कुछ भी होता है उसमें देवता, मानव की इन्द्रीयों से नहीं बल्कि ब्रम्ह शक्तियों ब्रम्हाणी सत्ता से होता है, इसलिये अभीमान नहीं करना।

इस उपनिषद में प्रथम मंत्र में प्रश्न पुछा था कि मन, प्राण बगेर की क्रियाओं के प्रेरक कोन है?इसका उत्तर में ये उमा–हेमवती की कथा आती है कि क्रिया मात्र के प्रेरक ब्रम्हा है। देवता जेसे देव भी अहम माने 'अहम कर छीकें' और 'अहम करे कि विजय छिकें' तो यह बात गलत है, मिथ्या भ्रान्ती है कारण कि ब्रम्ह शक्ति के बिना अग्नि तणबुल को जला नहीं सकी, वायु उडा नहीं सकी।

उमा–हेमवती कथा में से डॉ. राधाकृष्णन ने यह बताने का प्रयास किया है कि उपनिषदों के दृष्टक हिमालय की चोटियों पर नहीं ओर नहीं जंगलों में रहते थे .....जींज जीम जीवनहीज of the Upanishad was developed by the forest dwellers in the mountain fastness of the Himalayas. अलबत्ता ये कारण बहु स्वाभाविक प्रतीत नहीं होता है।

उमा–हेमवती अति सुन्दर कथा है। उमा इसलिये ब्रम्ह विद्या अथवा आत्म विद्या और आत्म विद्या अन्य कोई नहीं बल्कि सुन्दर होती है।जेसेः Wisdom is the most beautiful of all beautiful things.-Radhakrishnan

सान्दर्य तो आंतरिक अभिव्यक्ति है। कुरूप हो पर विद्वान हो तो अच्छा लगता है। करूपो2पि विद्यावान् बहु शोभते।

देवताओं के लिये उमा–हेमवती के दर्शन–देवी दर्शन, देवी की कृपा जैसा है। जहां तक देवी की कृपा न हो तो आत्मदर्शन कोसो दूर हो जाते है। यही भाव यहां देखने को मिला।

अथर्ववेद केनसूक्त (10–12) में केन उपनिषद विचार का और उमा–हेमवती कथा का बीज रहा हूआ है। ऐसा विद्वानों ने स्वीकार किया है।

60 से 70 बार केन के प्रश्न है। जिसमें केन उपनिषद प्रथम मत्रों के प्रश्नों स्पष्ट रूप से आयी ऐसा मानने में आया। केनसूक्त में ब्रम्ह आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिर्वेदिक स्वरूप की बात अनुक्रमांक 13, 21 और 25 में मंत्र में आयी है। केनउपनिषद में अन्त के मंत्रों में अधिर्ववेदि आने अध्यात्म की चर्चा है। केनसूक्त 32 में मंत्र हैः–

तस्मिन् हिरण्यये कोशे व्यरे त्रिप्रतिष्ठिते।
तस्मिन् यद् खक्षमःत्मन्वत् तद्वै ब्रम्हविदो बिन्दुः।।

ये स्वर्ण कोश तीन आरावणों और तीन प्रतिष्ठावाली है। उसमें आत्मवत् यक्ष रहे है उसे ब्रम्ह विद्या जान सकते है।

यहां यक्ष की आख्याचिकानुं बीज साफ देख सकते है, स्वर्ण कोश मे से हेमवती उमा की बात आयी हो तो कोई बढी बात नहीं।

संदर्भः

केनउपनिषद,
माण्डुकद उपनिषद,
ईशावाश्य उपनिषद

Please cite this Article as : *पण्डया विजय कुमार प्रकाशचन्द , केन उपनिषद में उमा–हेमवती की कथा* **: Indian Streams Research Journal (MAY ; 2012)**